Discourse on Gita & Ramayan Every Ekadashi

प्लॉटिंग विकसित की जा रही थी। उपरोक्त स्थल पर किये गये अवैध प्लॉटिंग को प्रवर्तन टीम एवं पुलिस बल के सहयोग से ध्वस्त किया गया।

गीता साक्षात ब्रह्म है : प्रो. दानपति

वाराणसी। जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा प्रत्येक एकादशी तिथि पर 'श्रीमद् भगवीता व्याख्यान-सत्र' का उद्घाटन मंगलवार को हुआ जिसमें मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर दानपति तिवारी रहे। उद्घाटन-सत्र का मुख्य विषय 'प्रथम अध्याय- अर्जुन विषाद योग' की वर्तमान में प्रासंगिकता एवं महत्व रहा जिस पर मुख्य अतिथि ने कहा कि 'ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग से समवेत यह गीता साक्षात ब्रह्म है। ज्ञान योग सत्य की प्राप्ति करता है, कर्म योग से चित्त निर्मल होता है तथा भक्ति योग से आनंद की प्राप्ति होती है। इस अवसर पर भित्ति पत्रिका का अनावरण अध्यक्ष द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर रमेश चंद ने कहा कि गीता पुस्तक नहीं मस्तक है यह रूपक है। उन्होंने आधुनिक विद्वानों के मत का उल्लेख करते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने अपने कठिन समय में स्वतंत्रता संघर्ष में जब जेल में थे तब उन्होंने श्रीमद्भागवतीता को पढ़ा। उसी भांति विनोबा भावे वीर सावरकर आदि सभी महापुरुषों ने गीता का ही आश्रय किया है। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो अनिल प्रताप सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। निदेशक प्रो. निलय कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस अवसर पर बीज वक्तव्य प्रोफेसर पुष्पा सिंह ने दिया। संचालन डॉ. लक्ष्मी सिंह ने किया। इस अवसर पर हिंदी विभाग के डॉ. विनय प्रकाश शर्मा, वर्षा सिंह, डॉ नन्दलाल शर्मा, प्रो ज्योति मिश्रा, प्रो अशोक कुमार सिंह, डॉ शकुंतला सिंह, रवि पांडेय आदि प्राध्यापक गण उपस्थित रहे। कर्मचारियों में प्रताप सिंह, हिमांशु जायसवाल, रवि आदि उपस्थित रहे। संस्कृत विभाग की शिल्पी गुप्ता ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया तथा आलोक पांडे ने स्वास्ति वाचन तथा सत्यम तिवारी ने गीता पाठ प्रस्तुत करके सभी का मन मोह लिया।

रामायण के अयोध्या कांड पर व्याख्यान का आयोजन

वाराणसी। जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा सफला एकादशी व्याख्यान सत्र ज्ञान यज्ञ प्रवाह के अंतर्गत रामायण के अयोध्या कांड पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के अंग्रेजी विभाग के प्रो. नलिनी श्याम कामिल रहे। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो अनिल प्रताप सिंह, मुख्य अतिथि उप प्रबंधक प्रो० निलय कुमार, कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो० रमेश चंद पाठक ने दीप प्रज्वलित कर तथा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर सत्र का शुभारंभ किया। प्राचार्य ने मुख्य अतिथि प्रो० नलिनी श्याम कामिल जी को रामलला की मूर्ति स्मृति चिन्ह के रूप में प्रदान कर उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि ने सभी को संबोधित करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि अयोध्या से कोई युद्ध करने का साहस ही नहीं कर सकता था इसलिए उसका नाम अयोध्या पड़ा तथा "रामायण"- "राम का मार्ग" यह अर्थ है, जहां राम का निवास है वह ही रामायण है। दशरथ ने राम के राज्याभिषेक के लिए गुरु वशिष्ठ की आज्ञा ली जिससे गुरु के सम्मान को सर्वोच्च बतलाया। अध्यक्ष उद्बोधन में प्रो०रमेश चंद ने भरत को केंद्र में रखकर राम कर्म मार्ग को प्रकाशित किया कि भरत नहीं रहते तो राम सर्वस्व सर्व लोकप्रिय नहीं हो पाते, साथ ही समाज को मंथरा रूपी कुत्सित मनोवृतियों से बचना होगा। महाविद्यालय के प्राध्यापक गणों में डॉ० सुभाष सिंह, डा० नंदलाल शर्मा डॉ० शकुंतला सिंह, डॉ० मोनिका, शशिबाला, डॉ० सुरेश सिंह,डा० विनय प्रकाश शर्मा,चंद्रशेखर, माला आदि प्राध्यापक गणों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर आलोक पांडेय ने वैदिक मंगलाचरण प्रस्तुत कर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया।